International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website: https://ijaar.co.in/*
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

Original Article

निर्मला पुतुल की कविताओं में पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व

भालदारे भक्ती शंकर

हिंदी विभाग,

महिला महाविद्यालय, कराड

Manuscript ID:
IJAAR-130430
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 4
March – April 2026
Pp. 194 - 197

Submitted: 18 Mar. 2026
Revised: 07 Apr. 2026
Accepted: 09 Apr. 2026
Published: 10 Apr. 2026

Corresponding Author:
भालदारे भक्ती शंकर

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.21278547

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.21278547

Creative Commons

OPEN ACCESS

शोध आलेख का सारांश:

साहित्य मनुष्य को भावनाओं और मूल्यों के द्वारा शिक्षा देता है तो पर्यावरण मनुष्य को एक सदृश शरीर आरोग्य देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यावरण के कारण ही मनुष्य अपना सुखमय जीवन जी सकता है परंतु वर्तमान समय में कंक्रीट के जंगलों, प्राणियों की हत्याएं इतनी बढ़ गई है कि मनुष्य का भविष्यकाल में जीवित रहना असंभव सा लगने लगा है।इसीलिए सृष्टी को बचाने के लिए पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता है ।

बीज शब्द: पर्यावरण, भूमंडलीकरण, भौतिक विकास, मौसम असंतुलित, विकास की तृष्णा संरक्षण आदि ।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

भालदारे भक्ती शंकर (2026). निर्मला पुतुल की कविताओं में पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व. International Journal of Advance and Applied Research, 13(4), 194 - 197. https://doi.org/10.5281/zenodo.21278547

प्रस्तावना:

निर्मला पुतुल प्रकृति से जूडी कवयित्री है। आप ने प्रकृति को लेकर काव्य सृजन किया हैं । पर्यावरण का संरक्षण तथा संवर्धन को कवयित्री ने 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' कविता संग्रह में रेखांकित किया है ।

शोध विषय का विश्लेषण:

साहित्य और पर्यावरण मनुष्य के भीतरी और बाहरी दोनों परिवेश के लिए आवश्यक है। साहित्य मनुष्य को भावनाओं और मूल्यों के द्वारा शिक्षा देता है तो पर्यावरण मनुष्य को एक सदृश शरीर आरोग्य देने में महत्वपूर्ण भूमिका

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

निभाता है। पर्यावरण के कारण ही मनुष्य अपना सुखमय जीवन जी सकता है परंतु वर्तमान समय में कंक्रीट के जंगलों, प्राणियों की हत्याएं इतनी बढ़ गई है कि मनुष्य का भविष्यकाल में जीवित रहना असंभव सा लगने लगा है। वर्तमान समय में विविध कंपनियां ,मील ,भूमंडलीकरण के विकास के आड़ में हम अपनी ही प्रकृति की हत्या कर रहे हैं 1 हम उसका संवर्धन करने के बजाय उसका ऱ्हास करने पर तुले हैं। इसे ही हमने विकास के चादर से लपेटा है। इस चादर को हटाने का काम निर्मला पुतल ने अपनी कविताओं में बहुखुबी से किया है 1 उनकी कविताओं में प्रकृति शक्ति,ईश्वर और श्रद्धा का स्थान है। उनका कहना है जीवन के हर मोड़ पर सुख-दुख में दिशा दिग्दर्शन करने वाली प्रकृति अर्थात पर्यावरण का संरक्षण और संवर्धन हमें करना चाहिए। आप स्वयं आदिवासी जनजाति में जन्मी हुई कवित्री है 1 इसी कारण उनका संगोपन प्रकृति के गोद में हुआ है। हमें ज्ञात है कि आदिवासी संस्कृति पर्यावरण के हर घटक में देवता का भाव रखती है इस विश्वास के कारण ही निर्मला पुतुल की कविताओं में हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरणा मिलती है।

पर्यावरण का महत्व पर्यावरणविद् पंकज चतुर्वेदी स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि-"कैसी विडंबना है कि जिस देश का समाज,सभ्यता,संस्कृति,पर्व,जीविकोपार्जन और संस्कार आदि सभी कुछ नदियों के तट पर विकसित हुए और इस पर निर्भर रहे हैं,वहां की हर छोटी बड़ी नदी अब कूड़ा ढोने का वाहक बनकर रह गई है।"1

इस प्रकार मनुष्य ने जिन नदी पहाड़ों को आराध्या के रूप में स्वीकार उसी की स्थिति वर्तमान में कलुषित होती हुई दिखाई देती है। इसका मुख्य कारण मनुष्य का स्वार्थ है। क्योंकि वह पृथ्वी का राजा बनना चाहता है। इसी प्रकार निर्मला पुतुल भी मानव के भौतिक विकास को क्षणभंगुर विकास कहते हैं क्योंकि पर्यावरण को दाव पर लगाकर मानव जाति विकास की ओर पहल करने के बजाय राज की और पहल करती हुई दिखाई देती है। इंसान खुद स्वयं के पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है पर्यावरण इतना दूषित हो गया है कि मानव जाति विविध बीमारियों से ग्रस्त है उसकी आयु सीमा कम हो गई है। पुत्री माता मानव जीवन का दैनंदिन अंग बनती जा रही है। रोज के जीवन में प्लास्टिक से बनी वस्तुएं मनुष्य जीवन का अंग बनी हुई दिखाई देती है। शुद्ध पानी की संकल्पना नदिया झरनों के बजाय अब सभामंडपों, शादी-ब्याह में प्लास्टिक की बोतलों ने ले ली है। 'जब टेबल पर गुलदस्ते की जगह बिसलेरी की बोतले सजती है।' इस कविता में कवित्री निर्मला पुतुल कहती है -

" अब जबकि गुलदस्ते की जगह
सम्मेलनों में हमारे टेबल के ऊपर बिसलेरी बोतलें सजती हैं।
ना चाहते हुए भी पानी पी-पी-कर बोलना पड़ता है।
अपने इलाके के सुखे स्रोतों पर
ऐसे में जब बाजार से गुजरते
एक गिलास पानी मिलना कठिन हो गया है,
और पेप्सी आसान।"2

इस प्रकार जीवन अमृत महंगा और कृत्रिमता से बने हुए जल सस्ते हो गए हैं। यह भूमंडलीकरण का ही परिणाम है।

प्रकृति ही हमें जीवन जीने की प्रेरणा देती है हर संकट का सामना करने का समर्थ देती है हम देखते आए हैं कि हमारे पूर्वज हमसे भी तंदुरुस्त और आरोग्य संपन्न थे परंतु वर्तमान में मनुष्य आयु लघुत्तम होती जा रही है यह पर्यावरण समतुला और संरक्षण न करने का ही परिणाम है निर्मला पुतुल

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

पहाड़ी बच्चा इस कविता में पहाड़ी बच्चों की मानसिक और शारीरिक ताकत का वर्णन करते हुए कहती है –

" लड़खड़ा ते कदमों से पहाड़ चढ़ते
रोपता है पहाड़ी धरती पर पाँव
पहाड़ी माहौल में
पहाड़ की तरह
पूरी ताकत से उगने के लिए। "3

मनुष्य की मानवता समाप्त होती जा रही है उसकी आंखों पर ध्यान और भौतिक सुख सुविधाओं ने पट्टी बांध रखे हैं वह पर्यावरण की आवाज सुन नहीं पा रहा है इसी कारण वह पर्यावरण को तहस-नहस कर रहा है। इसी का परिणाम आज हम देख रहे हैं की मौसम असंतुलित होता जा रहा है, सफल अच्छी नहीं उग रही है, तो कभी बाढ़ तो कभी उसे मांग का बढ़ता जा रहा है इसी कारण जमीन नेपिक बनती जा रही है वृक्ष तोड़ के कारण भूजल स्तर कम होता जा रहा है साथ ही जीवन व्यू बढ़ाने के बजाय कार्बन डाइऑक्साइड बढ़ रहा है। मनुष्य की यह विकास की तृष्णा उसे रस की ओर लेती जा रही दिखाई दे रही है। वह भूल गया है की धरती मां उसके विकास की आग में जल रही है 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में कवित्री ने इसी और हमारा ध्यान खींचा है और हमें सचेत किया है-

" कभी महसूस किया है कि किस कदर बदलता है
मौन समाधि लिए बैठा पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूट कर जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर?
सुनाई पड़ी है कभी भरी दोपहरियों में
हथौड़ों की चोट से टूट कर बिखरते पत्थरों की चिख?4

पढ़े लिखे बुद्धिजीवी वर्ग अपना विवेक खोकर प्रकृति के साथ गलत व्यवहार कर रहे हैं इसी कारण ही आज पर्यावरण पर संकट आ गया है इस संकट से यदि हमें बचाना है तो हमें पर्यावरण संवर्धन करना होगा हर एक मनुष्य को वृक्ष लगाकर उसका संवर्धन करना होगा पर्यावरण घटक वस्तुओं पर निबंध लाना होगा तभी पहले जैसी प्रकृति जीवित रह सकती है ऐसे ही एक आदिवासी लड़की अपने पिताजी से उतनी दूर मत बहाना बाबा कविता में बिनंती करती हुई दिखाई देती है -

" जंगल नदी पहाड़ नहीं हो जहाँ
वहां मत कर आना मेरा लगन
और उसके हाथ में मत देना मेरा हाथ
जिसके हाथों ने कभी कोई पेड़ नहीं लगाये। " 5

साथ ही वह लड़की यह इच्छा भी व्यक्त करती है -

' वसंत के दिनों में ला सके जो रोज
मेरे जुड़े के खातिर पलाश के फूल।' पृष्ठ क्र. 50

इस तरह इस कविता में कवित्री ने पर्यावरण प्रेम व्यक्त करते थे उसका संवर्धन करने में ही मानव का वास्तविक विकास है यह संदेश दिया है। उनका कहना है पर्यावरण संरक्षण से ही मनुष्य जीवन आनंद से ओत - प्रोत हो सकता है।

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता मानव को महसूस हो रही है इसके लिए हमें संगठित होकर प्रकृति के हर घटकों को सुरक्षित रखना होगा इसमें वृक्ष, जल ,मिट्टी,पशु –पंछी, प्राणी , किटक आदि। आओ मिलकर बचाएं कविता में निर्मला पुतुल यही संदेश देते हुए कहती है -

" जंगल की ताजी हवा
नदियों की निर्मलता
पहाड़ों का मौन
गीतों की धुन

मिट्टी का सौंधापन

फसलों की लाहलहाट

आओ,मिलकर बचाएं। 6

इस तरह पर्यावरण संरक्षण करना पृथ्वी के हर एक व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है। यदि पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तभी संपूर्ण सृष्टि सुरक्षित और सुंदर रह सकेगी। पर्यावरण संरक्षण से ही मानव का जीवन सुजलाम- सुफलाम बन सकता है 1 पर्यावरण संरक्षण के लिये हम सभी को संगठीत होकर भूमंडलीकरण के विरुद्ध पहल करनी होगी ,तभी मौसम संतुलित रह सकता है 1 वृक्ष संवर्धन से, भूजल वृद्धि तथा स्वच्छ हवा प्राप्त हो सकती है 1 यही संदेश निर्मला पुतुल, जैसे रामदयाल मुंडा,अनुज लुगुन, यशोधा मुर्म आदि कवियों ने अपनी कविताओं में दिया है और सुधी पाठकों को सचेत किया है 1

संदर्भ सूची:

1. मझधार में धार - पंकज चतुर्वेदी
2. निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी जीवन- डॉ.संध्या मेनन पृष्ठ क्र. 53
3. निर्मला पुतुल - नगाड़े की तरह बजते शब्द पृष्ठ क्र. 39
4. निर्मला पुतुल - नगाड़े की तरह बजाते शब्द पृष्ठ क्र. 32
5. निर्मला पुतुल- नगाड़े की तरह बजाते शब्द पृष्ठ क्र. 49-50
6. डॉ. संध्या पुतुल-निर्मला पुतुल-संध्या मेनन